आरती श्री गायत्री जी की।
आरती श्री गायत्री जी की,
ज्ञान दीप और श्रद्धा की बाती
सो भक्ति ही पूर्ति करै जहं घी की |
आरती श्री गायत्री जी की |
मानस की शुची थाल के ऊपर
देवी की ज्योति जगै, जहं निकी|
आरती श्री गायत्री जी की |
शुद्ध मनोरथ के जहां घंण्टा,
बाजै करै पूरी आसहु ही की |
आरती श्री गायत्री जी की |
जाके समक्ष हमें तहि लोक कै
गद्धी मलि तबहूं लगे फीकी|
आरती श्री गायत्री जी की |
संकट आवै न पास कबौ तन्हि
सम्पदा औ सुख की बनै लकि|
आरती श्री गायत्री जी की |
आरती प्रेम सो नेम सों करि
ध्यावहि मूर्ति ब्रम्हा लली की |
आरती श्री गायत्री जी की |